Year-9-10; 2018-19
ISSN–2231-1130
Impact Factor – 3.521(IIJIF)
●●●●VEETHIKA●●●

मिथकीय लोकसाहित्य में इतिहास

संतोष कुमार दुबे*
डॉ0 राधेश्याम साहू**

भूमिका –

जंगल मा जंगलिहा लूटइ, घर लूटइ पटवारी।
बीच सड़क मा थाना लूटइ, कइसे धरौं मैं धीर हो।

लोक साहित्य मानव के सुख–दुःख, राग–विराग, तीज–त्योहार, परम्परायें और जिन्दगी के विभिन्न आयामों में एक सहचर की भांति साथ–साथ चलता है तथा हर मोर्चे में एक प्रहरी की भांति उसकी रक्षा के लिए तत्पर रहते हुए संवेदनशील सचेतक की तरह कार्य करता है। इसमें मानव के ऐतिहासिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक परिवेश को दर्शित करने में समर्थ है।

भारतीय लोक साहित्य अत्यन्त विशाल, समृद्ध एवं विस्तृत फलक में विखरा हुआ है। इतिहास विषयक अनेक लोक ऋचाएँ लोक मानस के कंठों में रची बसी है। इसीलिए मैक्समूलर फ्लीट, कनिंघम एवं ग्रियर्सन आदि विद्वानों ने यह मत प्रतिपादित किया कि भारतीय मनीषा पारलौकिक विषयों के चिन्तन में ही निमग्न रहा करते थे। इहलोक के सुखों तथा उनसे संबंध रखने वाली विधाओं की ओर उन्होंने विशेष ध्यान दिया। उनका मानना था कि इतिहास का सबसे बड़ा स्रोत लोक साहित्य ही है।

इसी तरह कृष्णदेव उपाध्याय का भी मानना है कि लोकगीतों और लोकगाथाओं में इतिहास की प्रचुर सामग्री भरी पड़ी है जिनके सम्यक् अध्ययन से हमारा ऐतिहासिक भंडार समृद्ध किया जा सकता है। इन लोकगीतों में स्थानीय इतिहास का पुट बड़ा गहरा है जिनके उद्घाटन से हमारे विलुप्त अथवा विस्मृत इतिहास पर पूर्ण प्रकाश पड़ता है।

लोक में किसी कार्य का श्रीगणेश करने के लिए लोक देवी–देवताओं की अर्चना करने की परम्परा रही है। यथा –

''भुंइया माता तोर सरनि हइ, दइउ तोर विसुआस।''

लोक जीवन का सत्व लोकगीतों में उतरता है। यदि जीवन की प्रकृति अभिव्यक्ति को पहचानना है जानना है तो हमें लोकगीतों का मुंह झांकना पड़ेगा। वास्तव में लोकगीत जनमानस के वे स्वाभाविक उद्गार हैं जो प्रकृति के सृजन में चैतन्यता के साथ निरंतर सामाजिक सरोकार सृजित करते चले आ रहे हैं। धरती की स्वाभाविक सुगन्ध, जनचेतना का प्राकृतिक रूप–विद्रूप, मानस की आकुलता–व्याकुलता, सामाजिक नियंत्रण, वेदना–संवेदना सभी कुछ इन लोकगीतों की अक्षय धरोहर हैं। इसीलिए संसार भर की समस्त भावनाओं के लोकगीतों में एक ही आत्मा विराजमान है। राग–विराग, ईर्ष्या–द्वेष, प्रेम–टीस, तड़प, घुटन, कसक, उल्लास, उत्साह एवं मादकता जो समस्त मानव समाज में एकल भाव से प्रतिष्ठित है। उन्हीं सब भावों और विचारों का स्वाभाविक स्फुरण इन लोकगीतों में आबद्ध है।

विश्लेषण –लोकगीतों में वर्णित भाव या उद्गार किसी एक व्यक्ति के हृदय के उच्छवास नहीं हुआ करते प्रत्युत उनमें उस समाज के समस्त व्यक्तियों के हृदयगत भावों की स्वच्छन्द अभिव्यक्ति भी हुआ करती हैं। स्वाभाविकता के कारण ही ये लोकगीत लोगों के मन में घर किये हुये हैं। परम तत्व की भांति मन, आंखों और प्राणों में क्या लेने लायक है, क्या नहीं? इनकी स्वाभाविकता जैसे जंगल के फूल और मिठास जैसे सत्व का रस, पत्थर दिल पर भी जादुई प्रभाव डालता है। देश के कोने कोने में बिखरे पुष्पित पल्लवित लोकगीतों की धड़कन ही जनमानस के जीवन का सत्व जान पड़ती है। बघेली लोकगीत बघेलखण्ड की निधि हैं। इन गीतों में इतिहास अंखुआता है। अतः कहने का तात्पर्य यह है कि लोकगीतों, मिथकों, दन्त कथाओं, लोकगाथाओं के विश्लेषण से इतिहास का नव सृजन होता है। यथा –

नारसिंह नरहुल का राजा, तोंहि रे बिना.....
आबै न ए कउ देव नारसिंह तोंहि रे बिना।

अथवा

नारसिंह नरगढ़ का राजा! नरगढ़ का....
नरगढ़ जोतय खेत नारसिंह अड़गड़ रे।

अर्थात् अभिजात्य सुसंस्कृत वर्ग के इतर लोक मानस वैदिक देवी–देवताओं के अतिरिक्त लोक देवता – खेरमाई, भुंइया माता, कांये की देवी, मरी माता, दैत्य–दानव, भूत–प्रेत, जंत्र–मंत्र, टोना–टोटका आदि परा शक्तियों पर विश्वास करते हैं। अतः जिस तरह से सुसभ्य अभिजात्य वर्ग वैदिक देवी–देवताओं की कल्पना, पूजा, अर्चना यज्ञादि अनुष्ठानों का सम्पादन करते हैं उसी तरह लोक मानस भूत–प्रेतादि परा आत्माओं की पूजा करता है। तथा इन्हें प्रसन्न करने के लिए नवरात्रि एवं रामनवमी नवदुर्गा के दौरान दिनभर निर्जला उपवास रहकर उनकी अर्चना कर सिद्ध प्राप्त करने की आकांक्षा से उन्हें अपने अंग/अन्तर्मन में अन्तर्निहित करने की चेष्टा करता है। तथा इस मांगलिक अवसरों पर ढोलक, मंजीरा एवं नगरिया जैसे लोक वाद्यों के थाप के साथ भगत गीत गाया जाता है। यथा –

एतना बोकरा का करबे धानू, कहॉ चढ़उबे जाय होमा।
एक ता चढ़ाउब हिन्गलाज मा, दूजै मैहर आय होमा।।

*सहायक प्राध्यापक इतिहास शासकीय महाविद्यालय, बरगवॉ, जिला सिंगरौली (म0प्र0)
**अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवा (म0प्र0)

देवी अ देउता लगिहीं सहाय के, हम कूरी लै लेब होमा।।

इस तरह से बड़े जोश–खरोश के साथ विभिन्न भक्ति गीतों का गायन होता है और पण्डा कूरी (सिद्धि प्राप्त करने) की कामना को भलीभूत करने की कामना करता है।

कोई भी पूजा अर्चना यज्ञादि साध्य के लिए कोई न कोई साधन या प्रतीक अवश्य होता है जिसके माध्यम से ही सिद्धि प्राप्त की जा सकती है। जैसे अभिजात्य वर्ग इसके लिए मंदिरों में मूर्तियों का प्रतीक स्थापित कर सिद्धि प्राप्त करने की चेष्टा करते हैं। उसी तरह भारतीय लोक मानस इसके लिए घर के कोने में चौरी (चबूतरा) का निर्माण करता है तथा इसमें अपने लोक देवता के नाम की कूरी रखता है जिसमें करतार, बाबा, नारसिंह, मनसा, मीरकुँवर परिहार, जादवराय बाबा, बरम बाबा भैरम बाबा, सन्यासी, बघाउत, बड़ादेव, दूल्हादेव, ब्रम्ह, अगियाबैताल, भैंसासुर, मरीमाता, बूढ़ीमाता, फूलमती, कोदवा माता आदि होते हैं। यथा–

हे करतार बाबा नारसिंह मनसा, मीरकुंवर परिहार गोरइया बाबा।

हइ जवा–जुरकुटी तोंहरेन धाहें, दूल्हा, दूलम, धनुआ सब आबा।।

कहने का तात्पर्य यह है कि जिस तरह दूध में मक्खन का वजूद विद्यमान होता है किन्तु वह सामान्य तौर पर दिखता नहीं अपितु मक्खन प्राप्त करने के लिए दूध को मथना पड़ता है। इसी तरह वेदों, पुराणों, स्मृतियों, महाकाव्यों एवं अन्य धार्मिक साहित्य के अन्दर ही इतिहास छुपा होता है जिसे प्राप्त करने के लिए उसके आख्यानों का गहन मंथन एवं विश्लेषण करना होता है। यह कहना अतिश्योक्ति न होगा कि साहित्य ही इतिहास का मूल स्रोत है। ठीक इसी प्रकार आंचलिक इतिहास का सबसे बड़ा स्रोत लोकगीत, लोक साहित्य, लोक गाथायें, लोक कहावतें, परम्परायें एवं लोक मिथकीय दंत कथायें हैं। इसमें इतिहास के तथ्य समाहित होते हैं।

आइये उपरोक्त उद्धृत भगत गीत ''नारसिंह नरहुल का राजा, तोहिं रे बिना। आबइ न एकउ देव नारसिंह तोंहि रे बिना। ''या'' नारसिह नरगढ़ का राजा! नरगढ़ का। नरगढ़ जोतय खेत नारसिंह अड़गड़ रे।'' का सम्यक विश्लेषण करें।

इन्टरनेट एवं आंचलिक इतिहास की कतिपय पुस्तकों में यह तथ्य अभिहित है कि सतना जिले के रामपुर बघेलान तहसील के दक्षिणी भाग में नरो एवं करन पहाड़ अवस्थित है। जहॉ कोई तेली राजा राज्य करता था। साथ ही जिले के दक्षिणी भाग भरहुत के दक्षिणी पश्चिमी भाग में परसमनिया और मझिगवॉ पहाड़ में खोह, तेलियागढ़ आदि स्थानों में बारह गढ़ियों का भी उल्लेख मिलता है जो तेली राजाओं के शासनाधीन थी। किन्तु इन्टरनेट में उल्लेख है कि तेली राजा धार सिंह तैलप वंश का अन्तिम राजा था जो परिहारों के द्वारा मारा गया और इस भू–भाग में परिहार राजवंश के साम्राज्य की नीव पड़ी। वर्तमान नरों पहार का नाम जनश्रुतियों के अनुसार नरवरगढ़ था किन्तु उक्त लोकगीत में इस स्थान का नाम नरोपति के मरणोपरान्त नरहुल या नरगढ़ अभिहित किया गया है। लोकगीत में ''नरगढ़ जोतय खेत नारसिंह अड़गड़ रे'' से प्रतीत होता है कि उसका स्थान ऊबड़–खाबड़ व पथरीला था तथा वह निश्चय ही वह राजा किसान रहा होगा। अतः संभव है कि लोकगीत के विवेचनानुसार नरो पहाड़ ही हो जो आज भी ऊबड़–खाबड़ और दुर्गम है। तथा लोकगीतों से यह भी संकेत मिलता है कि नारसिंह तेली राजा धारसिंह का ही कोई पूर्ववर्ती राजा प्रतीत होता है।

नरों पहाड़ी के ऊपरी पठारी भाग में वर्तमान में नरसिंह अवतार की मूर्ति एक चबूतरे में अवस्थित है तथा उसके नीचे भुइयॉ माता की मूर्ति भी प्रतिष्ठित है तथा उसके परिसर में अनेक देवी देवताओं की मूर्तियॉ स्थापित की गयी हैं। जहॉ श्रावण मास में पहाड़ी के नीचे बसे गॉवों के लोग काफी तादात में भुइंया माता की पूजा अर्चना करने के लिए आज भी जाते हैं तथा वहॉ के लोग आज भी नरसिंह को उस पहाड़ का राजा मानते हैं। अतः कहने का तात्पर्य यह है कि इतिहासकारों ने तैलप राजाओं का टूटा–फूटा, बिखरा आंशिक इतिहास लिखने का दुस्साहस अवश्य किया है क्योंकि उनके लिए यह लेखन इस कहावत को चरितार्थ करता है कि ''उगिलत लीलत ग्रीटि गनेरी। भइ गति सॉप छंछूदर केरी।'' फलतः कहने का आशय यह है कि उन्हें उच्चकल्प (उॅचेहरा/नागौद) में परिहार वंश की स्थापना की पूर्व पीठिका बताना आवश्यक था कि इन्हें किस राजा के पतन के बाद उनका उत्थान या उद्भव एवं विकास हुआ। अपितु उन्हें इसकी पूर्वपीठिका में यह बताना उन इतिहासकारों की मजबूरी रही। जनश्रुतियों के अनुसार यह तथ्य भी उजागर होता है कि नरों, खोह, तेलियागढ़ में तेली राजाओं के पतन के बाद भी उन चिन्हित स्थानों पर आज तक कोई भी राजवंश वहॉ अपनी राजसत्ता स्थापित करने में सफल नही हो सका और न ही कोई बसाहट ही बस सकी। वस्तुतः वहॉ से 10–15 किलोमीटर की दूरी पर ही अपने राज प्रासाद निर्मित कराये गये। आज भी उन स्थानों में तैलप नरेशों के राज प्रासादों के खण्डहर, मूर्तियॉ, ईंटें, गढ़े शिल्पायित पत्थर एवं अन्य मृद्भाण्डों के अवशेष आज भी बिखरे पड़े हैं जो उनके गौरव गाथा के मूक दर्शक साक्ष्य हैं।

पहाड़ी के उत्तरी ढलान में प्राकृतिक वातानुकूलि झरने एवं गुफा के पास अवस्थित नककटी देवी एवं उनके ऊपर पहाड़ी के अन्दर खुफिया रास्ते में

बनी गहरी गुफा के द्वार में अवस्थित सप्त मार्तिका (खण्डित) की प्रतिमा से यह प्रतीत होता है कि यहॉ के निवासी शक्तिपूजा पर अधिक विश्वास करते थे। हो सकता है कि 84 शक्तिपीठों में प्रतिष्ठित शक्तिपीठ मैहर उसके समीप होने के कारण लोगों का रुझान इस ओर रहा हो। लेकिन भगत गीत में – ''एतना बोकरा का करबे धानू, कहॉ चढ़ाउबे जाय होमा। एकता चढ़ाउब हिन्गलाज मा, दूजै मैहर आय होमा।'' अंकित पात्र धानू पण्डा का उल्लेख है। सम्भवतः वह भी तेली जाति का प्रतीत है क्योंकि धनुका तेली, लोना चमारिन, एवं पं. सहदेव का आवाहन बार–बार अनेक लोक मंत्रों में ओझा लोग झाड़–फूँक के लिए करते हैं। मंत्रों में इन विजातीय पात्रों से यह तथ्य भी स्पष्ट होता है कि प्राचीन काल में जातीय राग–द्वेष एवं छुआछूत की भावना नहीं थी क्योंकि एक चमारिन के साथ एक पंडित का होना एक ही ऋचा में समरसता एवं सहिष्णुता का द्योतक है। वरन जो भी हो इस लोकगीत से यह अवश्य स्पष्ट होता है की धानू पण्डा अद्भुत शक्तिशाली, अदम्य साहसी, एवं सामर्थ्यवान था क्योंकि वह एक साथ हिन्गलाज एवं मैहर देवी की पूजा करने की अकांक्षा रखता था जो असम्भव तो नहीं अपितु कठिन एवं श्रमसाध्य अवश्य है क्योंकि जहॉ एक ओर हिंगलाज मध्यप्रदेश एवं राजस्थान की सीमा रेखा गांधी सागर बांध से 15 कि0मी0 दूर तारकेश्वर कुंड के सन्निकट राजस्थान में है वहीं दूसरा मैहर मध्यप्रदेश के दूसरे छोर सतना में स्थित है जिसकी दूरी लगभग 950 किलोमीटर है। अतः इस लोकगीत से स्पष्ट होता है कि धानू पण्डा उस समय 950 किलोमीटर की दूरी तय करने में सक्षम था।

लोक देवताओं में ''नारसिंह, मनसा, मीरकुंवर पहिरहार, गोरइया बाबा'' वीरों की पंक्ति में नारसिंह का नाम प्रथम पंक्ति में होने से उसकी श्रेष्ठता एवं पौरुषता को स्पष्ट करता है। अतः ऐसा प्रतीत होता है कि कालान्तर में नारसिंह सेना नायक तथा शेष सभी पात्र उनकी सेना के सदस्य रहें होंगे। यहॉ यह भी उल्लेखनीय है कि गोरइया नामक स्थान रामपुर बघेलान तहसील में एक गॉव है जहॉ तत्कालीन समय में बाबा/जोगी (गोस्वामी) जाति के लोगों का निवासस्थली रहा हो, आज भी इस गॉव में जोगी और तेलियों की बसाहट है।

दन्तकथाओं में अनेक मिथकीय गाथायें हैं जिसमें उल्लेख किया जाता है कि जोगी लोग मरने के बाद तेली, लोहार एवं लाला की खोपड़ी को जगाने का कार्य करते थे क्योंकि इन मृतकों की खोपड़ी मरणोंपरान्त भी सुसुप्तावस्था मे नहीं होती वरन उनके खोपड़ी में अनेक राज दफन होते हैं जो जगाने के बाद क्रियाशील हो जाते हैं उनकी ऐसी अवधारणा है। अतः नरो के पास गोरइया गॉव का होना भी एक ऐतिहासिक स्रोत का काम करता है।

नरो पहाड़ के नीचे पूर्वी भाग में पीछे दरवाजे के बगल में खुफ़िया सुरंग के पास एक गुफा है तथा उसके सन्निकट एक चहरी विद्यमान हैं। जनश्रुतियों के अनुसार यह चहरी तत्कालीन रानी फुलवा देवी के नहाने के लिए नहानदानी निर्मित कराई गयी थी जिसका अवशेष आज भी मौजूद है। अतः इस अंचल में लोक देवताओं में फुलमती देवी का भी उल्लेख मिलता है संभव हो कि जब नारसिंह वहॉ का राजा रहा हो जो मरणोपरान्त लोक मानस के लोक देवता के रूप में स्थापित हुआ हो तो उसकी पत्नी फुलवा देवी को भी निश्चित रूप से फूलमती के रूप में लोकमानस पूजता हो।

नरो, खोह, तेलियागढ़ के वीरान खण्डहर जहॉ आज तक उसी रूप–स्वरूप में विद्यमान हैं उसमें निवासरत तेली राजाओं के मरणोपरान्त आज भी उस स्थान पर किसी भी बसाहट का उल्लेख नहीं मिलता। इससे यह तथ्य अवश्य प्रकट होता है कि तेली के खोपड़ी का प्रभाव उसका जलजला सदियों तक चिरस्थायी रहता है। ग्रामीण जनों का विश्वास है कि यहॉ से कोई भी कुछ ले जाता है तो वह बीमार पड़ जाता है और फिर दुबारा वही पर फेंक जाता है। वहॉ पर पड़े काड़ी, जेतवा या अन्य बिखरी हुई मूर्तियों के अवशेष इस बात का प्रमाण हैं कि तेली राजा का अस्तित्व आज भी उन खण्डहरों में विद्यमान है। ग्रामीणजन बताते हैं कि नरो पहाड़ में कुछ प्रभावशाली लोग बाक्साइड की खदान लगाये थे जो यहॉ की पुरा–सम्पदाओं को क्षतिग्रस्त भी किये। फलतः उन लोगों की काफी जन–धन की हानि हुयी और वे बाद में छोड़कर चले गये।

अनेक ग्रामीण जनों ने नरो एवं खोह पहाड़ के बारे में कई तरह की मिथकीय कहानियाँ बताते हैं जो कि किसी अजूबे या तिलिस्म से कम नहीं लगती। बानगी के बतौर जब उॅचेहरा नगर पंचायत के लिए विशाल बाराह की प्रतिमा लाने के लिए सरकारी मशीनरी खोह गयी तो वहाँ पड़ी बाराह की मूर्ति टस से मस नहीं हुई। लोग थक–हारकर वापस चले आये और गॉव के एक तेली से सहयोग की अपेक्षा की। वस्तुतः वह तेली अकेले ही जाकर उस मूर्ति को अपनी बैलगाड़ी में लादकर नगर पंचायत के प्रांगण में रख दिया जो आज भी परिषद के प्रागंण में अवस्थित होकर उसकी शोभा बढ़ा रही है।

एक दूसरा मिथक है – उॅचेहरा के पास रानी चन्द्रवती के प्रतिमा के सन्निकट एक स्थान है जिसे ग्रामीण जन रानी की पौली नाम से अभिहित करते हैं। परम्परानुसार उस स्थान पर शादी व्याह के अवसर पर तेल चढ़ाने की परम्परा है। जनश्रुतियों के अनुसार जो रानी की पौली में तेल चढ़ाना भूल जाता है या

जानबूझकर नहीं चढ़ाता उसके अनुष्ठान में कोई न कोई विघ्न–बाधा अवश्य आ जाती है। और वह बाधा रानी की पौली में तेल अर्पित करने के बाद ही दूर होती है किन्तु उस रानी के पौली में तेली जाति के लोगों का तेल नहीं चढ़ता। अतः यह भी एक अद्‌भुत घटना है जो किसी न किसी रूप में तेली राजा के मरणोपरान्त उसके जागृत मस्तिष्क का साक्ष्य होने के साथ ही उसके प्रतीकात्मक ऐतिहासिक साक्ष्य का स्रोत है।

नरो के पहाड़ के समीपी गॉव के छोटेलाल कुशवाहा ने बताया कि लगभग 15–20 वर्ष पूर्व सम्पत्ति की लालच में गॉव के 7–8 लोग कपड़ा, मिट्‌टी का तेल और उपरी (प्रकाश हेतु) लेकर नककटी देवी के पास की गुफा में अन्दर प्रवेश किये। लगभग 20 मीटर तक तो सकरा रास्ता मिला जिससे लोग लेटकर रास्ते को पार किया किन्तु बाद में काफी चौड़ा खुपिया रास्ता मिला जिससे लोग खड़े होकर जा सकते थे किन्तु वहीं पर क्रमशः चार सॉप मिले जिसे लोगों ने मारकर फेंक दिया और आगे चल दिये आगे जाने पर एक बहुत बड़ा एक फुट मोटा सॉप मिला जिसे देखकर लोग डर गये और वापस लौटने लगे लौटते समय जिन सॉपों को वे मार दिये थे वे भी जीवित होकर इधर–उधर भाग गये। अतः लोगों का मानना है कि आज भी उस पहाड़ी में तत्कालीन राजा की आत्मा विद्यमान है जो अपने खजाने की रखवाली कर रही है।

एक करमा लोकगीत भी इस पहाड़ी के अस्तित्व को रेखांकित करता है। यथा –

सुआ नारि डोंगरी मा हॉका खेलइ हो।
सुआ नारि डोंगरी मॉ...
आगे आगे हिरना भागे पाछे चलै शिकारी,
के सुआ नारि डोंगरी मॉ हॉका खेलइ हो।

अतः कहना न होगा कि नरो पहाड़ी के बगल में दक्षिण–पूर्वी ओर करन पहाड़ी अवस्थित है। करन तोता (सुआ) की एक प्रजाति है। अतः संभव है कि लोक गायकों ने नरो और करन पहाड़ को अपनी लोकभाषा में मिला–जुला स्वरूप में सुआ–नारि डोंगरी के रूप में अभिहित किया हो और वहॉ वन्य पशुओ की प्रचुरता लोगों के लिए शिकारगाह के रूप में रही हो क्योंकि आज भी नरो और करन पहाड़ी विभिन्न वनस्पतियॉ, पेड़–पौधे और झाड़ियों से आच्छादित है और आस–पास के लोग वहॉ से जलाऊ लकड़ी एवं पशुओं के चारागाह के रूप में इसका दोहन कर रहे हैं। अपितु फिर भी कालान्तर से लोक मानस प्रकृति के दोहन में कभी भी निश्चिन्त भाव से नहीं रह सका वह प्रशासन तंत्र के खौफ से सदैव चौकन्ना रहा। देखिए लोक मानस की अभिव्यक्ति एक लोक गीत के माध्यम से –

''छानी त छावा उतर खुनसी, हुसियारी मां रइहा, आवइ मुनसी।
गायउं ता पहारै लायों घुनसी, आगे हबइ रे दरोगा पाछे मुनसी।

यह लोकगीत अपने शब्द शिल्प के आधार पर प्रतीत होती है कि यह भी सतना जिले की बघेली है क्योंकि रीवा जिले की बघेली पूरी तरह ठेठ है अपने शब्द संरचना के आधार पर बघेलीखण्ड के प्रत्येक जिले की बघेली बोली की शब्द संरचना एवं बुनावट में भिन्नता है अतः वह पहचानी जा सकती है। अपितु वन–प्रान्तर में निवास करने वाले ग्रामीणजन पुलिस और वन महकमें से सदैव चौकन्ने और सचेत रहकर वन सम्पदा का दोहन करते थे।

ज्ञातव्य है कि तेली जाति अनादिकाल से ही जड़ता का पर्याय रहा है और वह दूसरे की सत्ता सहसा स्वीकार नहीं करता था इस संदर्भ में प्रो0 राजबली पाण्डेय ने भी अपनी इतिहास विषयक पुस्तक में उल्लेख किया है किन्तु इस बात का सबसे बड़ा प्रमाण हमारे लोक साहित्य में मिलता है। बानगी के बतौर इस लोकगीत (भगति) में देखा जा सकता है –

''बीच मैर मा बरम एक चौरा चौर रे!
आबइ न ए कौ देव बरम तोंहरे चौरा।.....
तोंहरे बुलाये सब केउ आयें चौरा रे!
तेलिया बीर नहि आबा बरम तोंहरे चौरा।''

अर्थात भारतीय इतिहास में चाहे जिसकी भी सत्ता रही हो लेकिन ब्राह्मण सर्वमान्य रहा और उसके आदेश को ईश्वरीय आज्ञा मानकर स्वीकार किया जाता रहा। सामाजिक वर्णव्यवस्था का संविधान कहे जाने वाले ग्रंथ मनुस्मृति में ब्राह्मणों को ईश्वर का प्रतिनिधि माना गया है। अतः उक्त लोकगीत में बरम बाबा (ब्राम्हण) के बुलाने पर भी तेली बीर नही जाता। इसी तरह इतिहास में दर्ज घटना ध्यातव्य है कि भामाशाह ने अकबर के विरुद्ध मोर्चा खोलते हुए महाराणा प्रताप की तन–मन–धन से सहायता की। अकबरी दरबार में तानसेन जैसे ब्राह्मणों का वर्चस्व था और वे इस जाति से कुपित होकर समाज की मुख्य धारा से बहिष्कृत करने का कुत्सित प्रयास किये। अतः उल्लेखनीय है कि तेली जाति के लोग उनका अनुगमन कभी नहीं किये चाहे वह लोक साहित्य हो चाहे शिष्ट साहित्य। अपितु संभव है कि गोस्वामी तुलसीदास जी ने इसी बात से अप्रसन्न होकर लिख दिया हो – ''ये वर्णाधम तेलि कुम्हारा। स्वपच किरात कोल–कलवारा।'' तेली जाति के लोगों का एक और गुण सर्वमान्य था, वे निडर थे, भूत–प्रेत आदि परा शक्तियों से भी नहीं डरते थे परिणामस्वरूप राजतंत्र से प्रजातंत्र के गुजरते हुये परिवेश में इलाकेदार जमीदार किसी बगार या पोखरी,

तालाब में कब्जा करना चाहते थे किन्तु वे भूत–प्रेतादि के भय से अपने को सक्षम नहीं पाते थे, तो वे कुछ दिनों के लिए वह गलिष्ठ स्थल किसी न किसी तेली को काश्त के लिए दिया करते थे। यह तथ्य इस बात का सबसे बड़ा प्रमाण है क्योंकि वर्तमान समय में भी अधिकांश मरघट/पोखरी पर कब्जा तेली जाति के लोगों का आज भी विद्यमान है।

उपसंहार –

अतः निष्कर्षतः उपरोक्त लोकगीतों के आलोक में कहा जा सकता है कि लोकगीतों में जहॉ एक ओर धार्मिक जीवन दर्शन है तो वही दूसरी ओर लोक मानस की सामाजिक एवं सांस्कृतिक स्थिति का खाका। और इसी खाके में लोकगीतों के गर्भ से इतिहास का भ्रूण अंकुरित होता है जो आगे चलकर यही भ्रूण एक सुदृढ़ ऐतिहासिक दरख्त के रूप में पुष्पित एवं पल्लवित होता है। वस्तुतः इतिहास लेखन में मिथक, जनश्रुति, लोकगीत एवं परम्परायें इसके कलेवर को सुदृढ़ एवं समृद्ध बनाने में रीढ़ की हड्डी की भूमिका निभाती हैं। अतए व हमें अपने अतीत को सहेजने के लिए वन–प्रान्तरों में निवासरत वनवासियों, पशु–पक्षियों, वनस्पतियों, पेड़–पौधें से एक कुशल मधुमक्खी की तरह हर रंग–विरंगी पंखुड़ियों से परागकण निकाल कर ऐतिहासिक शहद तैयार करना समीचीन होगा। फलतः लोक के सूत्र वाक्य का अनुगमन करना होगा –

कोइली जब गांवन के गीत गुन गुनाय रे।
ए क–एक आखर का चूमि चूमि जाय रे।

और अन्त में उसी लोक देवी–देवता का अभिवादन करते हुए –

जहॅ लग बना तहॉ लग गायेन,
जय बोला हिंगलाज होमा।

संदर्भ

1 राममित्र चतुर्वेदी – शहडोल जिले का आदिवासी गीत
2 Max Muller - The History of Sanskrit Literature
3 Fleet - Epigraphy (Imperial Gazatteer of India Vol. II)
4 डॉ0 भगवती प्रसाद शुक्ल – बघेली साहित्य का इतिहास
5 डॉ0 कृष्णदेव उपाध्याय – लोक साहित्य की भूमिका
6 गुलझारी चौधरी ग्राम देवरा–फरेंदा जिला रीवा से प्राप्त भगति गीत
7 अंगिरा प्रसाद तिवारी, ग्राम–मढ़ी तहसील अमरपाटन जिला सतना प्राप्त
8 महादेव कोल ग्राम पोस्ट मनिकवार जिला रीवा से प्राप्त भगति गीत
9 छकौड़ीलाल भठवा तहसील सिरमौर जिला रीवा से प्राप्त
10 अंगिरा प्रसाद तिवारी, ग्राम–मढ़ी तहसील अमरपाटन जिला सतना प्राप्त
11 डॉ0 राधेशरण – विन्ध्य क्षेत्र का वृहद इतिहास
12 बैजू प्रसाद कोल लकड़हारे से प्राप्त जानकारी के आधार पर
13 महादेव कोल ग्राम पोस्ट मनिकवार जिला रीवा से प्राप्त भगति गीत
14 जगन्नाथ यादव, बकरी चरवाहा से प्राप्त जानकारी
15 छोटेलाल कोल ग्राम अटरिया (उॅचेहरा) जिला सतना से प्राप्त जानकारी के आधार पर
16 डी0के0 साहू, ग्राम पोस्ट उॅचेहरा जिला सतना से प्राप्त
17 छोटेलाल कुशवाहा ग्राम सकरहट तहसील अमरपाटन जिला सतना
18 प्रो0 आदित्य प्रताप सिंह की डायरी से
19 डॉ0 भगवती प्रसाद शुक्ल – लोकरागिनी भाग–1
20 मोले प्रसाद साहू, ग्राम लोही पो. बदरॉव जिला रीवा से प्राप्त
21 डॉ0 रामलला शुक्ल – विन्ध्य वैभव